International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017
Available at https://edupediapublications.org/journals

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी दृष्टिकोण एवं आकांक्षास्तर पर पारिवारिक वातावरण और परामर्श का प्रभाव

शोध निर्देशक
डॉ0 ए0बी0 भटनागर

शोध छात्र
नीरेश बाबू
श्री वेंकश्वर विश्वविद्यालय
गजरौला, उत्तर प्रदेश

विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों पर शिक्षा संस्थानों एवं शिक्षा प्रणाली का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। वहीं दूसरी ओर पारिवारिक वातावरण और अभिभावकों के मार्गदर्शन भी उनकी औरतों को प्रभावित करते हैं।

विद्यार्थी के लिए माध्यमिक शिक्षा उसके जीवन का महत्वपूर्ण काल है। जूनियर हाईस्कूल स्तर पर विद्यार्थी लगभग सभी विषयों का अध्ययन करता है एवं सामान्य जानकारी प्राप्त करता है, जिसके फलस्वयपा अध्ययन संबंधी आदतों का निर्माण होता है। अध्ययन की अच्छी आदतें ही अच्छे चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण करती है, जिससे विद्यार्थी का जीवन संयमित, अनुशासित और सरल बन जाता है। विद्यालय में बच्चों का शिक्षा के अलावा पाठ्यसहगामी क्रियाओं के द्वारा सामूहिक क्रिया का भी विकास होता है। विद्यालय में विद्यार्थी के मानसिक विकास के साथ–साथ शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक विकास भी होता है जिसके कारण विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है।

बालकों की अध्ययन संबंधी आदतों का उसकी भावी सफलता से घनिष्ठ संबंध है। बालक छः घंटे अध्यापक के सम्पर्क में तथा अठारह घंटे अभिभावक के सम्पर्क में रहता है। अतः विद्यार्थी के भविष्य निर्माण में अध्यापक और अभिभावक ही योगदान कर सकते हैं। अंध्ययन संबंधी आदतों में बालकों की वे सभी क्रियायें आती हैं जो उसके व्यक्तित्व के

सर्वांगीण (शारीरिक, सामाजिक, मानसिक, धार्मिक, सांस्कृतिक) विकास को प्रभावित करती है।

परामर्श का अर्थ :–

बुनियादी तौर पर परामर्श के अन्तर्गत बालक को समझना और उसके साथ–साथ कार्य करना होता है जिसससे उसकी अनन्य आवश्यकताओं, अभिप्रेरणाओं और क्षमताओं की जानकारी हो और फिर उसे इनके महत्व को जानने में सहायता दी जाये। अध्ययन संबंधी आदतों पर परामर्श का अर्थ विद्यार्थी के अध्ययन संबंधी आदतों में सुधार करना तथा विभिन्न विषयों जैसे (अंग्रेजी, गणित, विज्ञान) में अध्ययन संबंधी कठिनाई का निराकरण करना।

अध्ययन संबंधी आदतों का अर्थ :– मानव जीवन में आदतों का विशेष स्थान होता है। वास्तव में आदत मूलरूप में एक मानसिक गुण है। बालक के अर्जित व्यवहार या सीखे हुए व्यवहार में आदतों का महत्वपूर्ण स्थान है। जब बालक किसी क्रिया या कार्य को अपनी इच्छा से जान–बूझ कर बार–बार दोहराता है त बवह क्रिया कुछ समय बाद बिना प्रयास के स्वतः संचालित होने लगती है। बार–बार दोहराये गये ऐच्छिक कार्यों के परिणाम को आदत कहते हैं। दैनिक जीवन के अधिकांश अध्ययन संबंधी कार्य आदतो ंके ही फलस्वरूप होते हैं। जैसे– पढ़ने का समय, लिखने का समय, उठने का समय, सोने का समय, मनोरंजन का समय, अवकाश के समय का उपयोग, अच्छी पुस्तकों का संग्रह करना, गृह कार्य करना, समय–सारणी बनाकर पढ़ना, प्रतिदिन स्कूल जाना आदि एक विशेष आदत के अनुसार होता है।

शोध के विशिष्ट उद्देश्य :–

1. निम्न तथा उच्च पारिवारिक स्तर के माध्यमिक विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी आदतों का अध्ययन करना।

2. परामर्श के पूर्व एवं पश्चात् माध्यमिक स्तर के छात्रों और छात्राओं की अध्ययन संबंधी आदतों का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गई–

1. माध्यमिक स्तर पर छात्रों और छात्राओं की अध्ययन संबंधी आदतों में कोई अन्तर नहीं है।
2. निर्देशन और परामर्श का विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों पर प्रभाव पड़ता है।

शोध विधि :–

यह अध्ययन निम्नलिखित विधि के अनुसार किया गया :–

(i) **मापन के उपकरण :–** शोध से सम्बन्धित निम्नलिखित मापन के उपकरणों की आवश्यकता पड़ी। इनके उपलब्ध न होने के कारण शोधकर्ता ने इनका निर्माण स्वयं किया, जिसका विवरण अधोलिखित है–

(A) पारिवारिक वातावरण सम्बन्धी प्रश्नावली – इस प्रश्नावली में परिवार की आर्थिक स्थिति, शैक्षिक स्थिति, और सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित 25 प्रश्न रखे गये।

(B) अध्ययन संबंधी आदतों की सूची – इसमें अध्ययन संबंधी सामान्य जानकारी के साथ 55 अध्ययन आदतों पर सूची बनायी गयी। जैसे– गृह कार्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम, अवकाश के समय का उपयोग, लिखने का समय, पढ़ने का समय, समय से स्कूल जाना, समय सारणी बनाकर पढ़ना, योजना बनाकर

अध्ययन करना आदि से सम्बन्धित तथ्य सूची में रखे गये। प्रत्येक कथन के सामने बने पांच खानों जो कि क्रमशः सदैव, बहुधा, कभी, कभी–कभी, कभी नहीं, में से किसी एक खाने में सही (?) का निशान लगाना था।

(ii) **न्यादर्श** :– इस शोध से सम्बन्धित जनसंख्या के अन्तर्गत गोरखपुर जनपद के माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत् सभी विद्यार्थी आते हैं। इनकी संख्या बहुत अधक होने के कारण सभी से आंकड़े एकत्रित करना संभव नहीं था। इसलिए न्यादर्श का चयन किया गया। सर्वप्रथम गोरखपुर नगर के माध्यमिक विद्यालयों में से 5 बालकों के तथा 4 बालिकाओं के इन्टर कालेज का लॉटरी विधि से प्रतिचयन किया गया। चयनित विद्यार्थियों की कुल संख्या 520 थी जिसमें 245 बालक तथा 275 बालिकायें थी।

आंकड़ों की व्याख्या :–

(i) विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव : – निम्न एवं उच्च पारिवारिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा व्यक्त किये गये आदतों के प्रति मतों की आवृत्ति को प्रतिशत में बदलकर सारणी किया गया, जिनका विवरण तालिका 1. 1 में प्रस्तुत है :–

निम्न एवं उच्च वर्ग के विद्यार्थियों की प्रमुख अध्ययन संबंधी आदतों का प्रतिशत

क्रमांक	प्रमुख अध्ययन संबंधी आदतें	**बालक**		**बालिका**	
		निम्न वर्ग	उच्च वर्ग	निम्न वर्ग	उच्च वर्ग
1.	गृह कार्य पूरा करना	60	89	58	88
2.	विभिन्न पुस्तकों से नोट लिखना	48	75	53	67

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017
Available at https://edupediapublications.org/journals

3.	शिक्षक द्वारा लिखाये गये नोट को लिखना	50	75	51	77
4.	विभिन्न पुस्तकों का संग्रह करना	43	83	42	79
5.	स्कूल समय से जाना	52	86	58	83
6.	समय–सारणी बनाकर अध्ययन करना	43	92	47	79
7.	योजना बनाकर अध्ययन करना	48	81	51	71
8.	विषय स्पष्ट न होने पर पुस्तकालय जाकर अध्ययन करना	43	81	49	79
9.	विषय में कठिनाई होने पर शिक्षा व अभिभावक से पूछना	40	73	42	67
10.	मॉडल व चार्ट के माध्यम से पढ़ना	29	59	41	52

तालिका 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि निम्न और उच्च वर्ग के बालकों के अध्ययन सम्बन्धी आदतों के प्रतिशत में अन्तर है। निम्न वर्ग के बालकों के गृहकार्य को पूरा करने का प्रतिशत 60% है, लेकिन उच्च वर्ग के बालकों के गृहकार्य पूरा करने का प्रतिशत 89% है। इसी प्रकार 48% निम्न वर्ग के बालक ही सहायक पुस्तकों की सहायता से स्वयं नोट लिखते हैं। लेकिन उच्च वर्ग के बालकों के 75% बालक ऐसा करते हैं। 43% निम्न वर्ग के बालक विभिन्न सहायक पुस्तकों का संग्रह करते हैं, लेकिन उच्च वर्ग के बालकों की संख्या 83% है। निम्न वर्ग के 43% बालक समय सारणी बनाकर अध्ययन करते हैं। लेकिन उच्च वर्ग के 92% बालक समय सारणी बनाकर अध्ययन करते हैं।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017
Available at https://edupediapublications.org/journals

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि निम्न और उच्च वर्ग के बालिकाओं की अध्ययन सम्बन्धी आदतों के प्रतिशत में अन्तर है। निम्न वर्ग की 58% बालिकायें विभिन्न सहायक पुसतकों की सहायता से स्वयं नोट लिख्याती हैं, लेकिन उच्च वर्ग की 67% बालिकायें ऐसा करती हैं। निम्न वर्ग की 42% बालिकायें विभिन्न सहायक पुस्तकों का संग्रह करती हैं। जबकि उच्च वर्ग की बालिकाओं का पुस्तक संग्रह करने का प्रतिशत 79% है। इसी प्रकार 47% निम्न वर्ग बालिकायें समय सारणी बनाकर अध्ययन करती हैं जबकि 79% उच्च वर्ग की बालिकायें समय सारणी बनाकर अध्ययन करती हैं।

(ii) विद्यार्थियों के प्रमुख अध्ययन संबंधी आदतों का परामर्श पूर्व एवं परामर्श पश्चात् व्यक्त मतों के प्रतिशत की तुलना :

A. बालकों के अध्ययन संबंधी आदतों के प्रति व्यक्त मतों की प्रतिशत की तुलना एवं क्रांतिक अनुपातः–

सर्वप्रथम बालकों द्वारा परामर्श पूर्व तथा परामर्श पश्चात् अध्ययन संबंधी आदतों के प्रति व्यक्त मतों के आवृत्ति पर आधारित प्रतिशतों में अन्तर की सार्थकता की जांच हेतु क्रांतिक अनुपात का मान ज्ञात किया गया। जिनका विवरण तालिका 1.2 में प्रस्तुत है।

क्र0	प्रमुख अध्ययन संबंधी आदतें	परामर्श पूर्व प्रतिशत	परामर्श पश्चात प्रतिशत	क्रांतिक अनुपात
1.	गृहकार्य पूरा करना	56	83	6.59*

2.	विभिन्न पुस्तकों से नोट लिखना	21	58	8.39*
3.	शिक्षक द्वारा लिखाये गये नोट को लिखना	38	75	8.27*
4.	स्कूल समय से जाना	74	91	4.95*
5.	समय–सारणी बनाकर पढ़ना	25	76	11.30*
6.	पंच घंटे प्रतिदिन स्वअध्ययन करना	55	87	7.82*
7.	परीक्षा में स्वनिर्मित नोट से पढ़ना	31	66	7.76*
8.	विषय में कठिनाई होने पर अध्यापक से तुरन्त पूछना	11	55	10.37*
9.	विषय स्पष्ट न होने पर पुस्तकालय जाकर अध्ययन करना	34	73	8.66*
10.	योजना बनाकर अध्ययन करना	34	73	8.66*

तालिका 1.2

* 0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका 1.2 के अवलोकन से स्पष्ट है बालकों के अध्ययन संबंधी आदतों के प्रति व्यक्त मतों में परामर्श के पश्चात् वृद्धि हुई है। तालिका में प्रदर्शित क्रान्तिक अनुपात का मान यह स्पष्ट करता है कि प्रायः सभी प्रमुख अध्ययन संबंधी आदतों के परामर्श पूर्व व परामर्श पश्चात् प्रतिशतों पर आधारित क्रान्तिक अनुपात का मान 2.58 से अधिक है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। बालकों की अध्ययन संबंधी आदतों को सुधारने में परामर्श का निश्चय ही प्रभाव पड़ा है। गृहकार्य पूरा करने वाले बालकों का प्रतिशत परामर्श के पूर्व 56% था लेकिन परामर्ष के पश्चात बढ़कर 83% हो गये। विभिन्न प्रकार की सहायक पुस्तकों से स्वयं नोट लिखने वाले बालकों का प्रतिशत परामर्श के पूर्व 21% था, लेकिन परामर्श के पश्चात् बढ़कर 58% हो गया। परामर्श पूर्व 25% बालक समय–सारणी बनाकर अध्ययन करते थे, लेकिन परामर्श देने के पश्चात उनकी संख्या बढ़कर 76% हो गयी।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017
Available at https://edupediapublications.org/journals

B. बालिकाओं का अध्ययन संबंधी आदतों के प्रति व्यक्त मतों की प्रतिशत की तुलना एवं क्रांतिक अनुपात :–

सर्वप्रथम बालिकाओं द्वारा परामर्श पूर्व सतथा परामर्श पश्चात् अध्ययन संबंधी आदतों के प्रति व्यक्त मतों के आवृत्ति पर आधारित प्रतिशतों में अन्तर की सार्थकता की जांच हेतु क्रांतिक अनुपात का मान ज्ञात किया गया। जिनका विवरण तालिका 1.3 में प्रस्तुत है।

तालिका

क्र0	**प्रमुख अध्ययन संबंधी आदतें**	**परामर्श पूर्व प्रतिशत**	**परामर्श पश्चात प्रतिशत**	**क्रांतिक अनुपात**
1.	गृहकार्य पूरा करना	57	83	6.66*
2.	विभिन्न पुस्तकों से नोट लिखना	32	63	12.11*
3.	शिक्षक द्वारा लिखाये गये नोट को लिखना	43	71	6.63*
4.	स्कूल समय से जाना	72	88	4.69*
5.	समय–सारणी बनाकर पढ़ना	32	79	11.11*
6.	पंच घंटे प्रतिदिन स्वअध्ययन करना	56	85	6.95*
7.	परीक्षा में स्वनिर्मित नोट से पढ़ना	34	69	8.21*
8.	विषय में कठिनाई होने पर अध्यापक से तुरन्त पूछना	20	64	10.47*
9.	विषय स्पष्ट न होने पर पुस्तकालय जाकर अध्ययन करना	38	74	8.51*
10.	योजना बनाकर अध्ययन करना	41	75	8.09*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका 1.3 के अवलोकन से स्पष्ट है बालिकाओं के अध्ययन संबंधी आदतों के प्रति व्यक्त मतों में परामर्श के पश्चात् वृद्धि हुई है। तालिका में प्रदर्शित क्रान्तिक अनुपात का मान 2.58 से अधिक है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। बालिकाओं की अध्ययन संबंधी आदतों को सुधारने में परामर्श की भूमिका रही है। परामर्श पूर्व 57% बालिकायें गृह कार्य पूरा करती थी। लेकिन परामर्श देने के पश्चात् इनकी संख्या बढ़कर 8%3 हो गयी। विभिन्न प्रकार की सहायक पुस्तकों से स्वयं नोट लिखने वाली बालिकाओं की संख्या परामर्श के पूर्व 32% थी, जो परामर्श के पश्चात बढ़कर इनकी संख्या 63% हो गयी। समयसारणी बनाकर अध्ययन करने वाली बालिकायें परामर्श पूर्व 32% थी लेकिन परामर्श पक्ष्यचात् इनकी संख्या 79% हो गयी।

निष्कर्ष :– उक्त अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों के बनने और सुधारने में पारिवारिक पृष्ठभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका देखी गयी। उच्च परिवार के बालकों एवं बालिकाओं को पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त अध्ययन संबंधी सामग्री जैसे– सहायक पुस्तकें, स्टेशनरी आदि के क्रय के लिए सरलता से आवश्यक पैसे मिल जाते हैं, लेकिन निम्न परिवार के विद्यार्थियों को नहीं मिल पाता है।

2. विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों के सुधार में परामर्श की भूमिका अहम् रही है। जो बालिक–बालिका परामर्श पूर्व योजनाबद्ध ढंग से समय–सारणी बनाकर अध्ययन नहीं करते थे, वे बालक–बालिका परामर्श पश्चात् इसके महत्व को समझने के उपरान्त योजनाबद्ध ढंग से समय–सारणी बनाकर अध्ययन करने लगे।

अन्त में यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों पर पारिवारिक पृष्ठभूमि और परामर्श का प्रभाव पड़ा है। परामर्श के पूर्व

तथा परामर्श के पश्चात् निम्न और उच्च वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अन्तर पाया गया।

संदर्भ–ग्रन्थ

1. Robinson F.P.: Principles and procedures in student counselling, New York, Harper & Bras, 1950, P.62
2. Cemp C.G.: Foundation of Group Counseling, New York, Mc. Braw, Hill Book Co., 1970, P.7
3. जयसवाल, सीताराम : शिक्षा में निर्देशन और परामर्श, विनोद पुस्तक प्रकाशन, आगरा, 1990
4. माथुर,एस0एस0 : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक प्रकाशन, आगरा, 1993
5. कपिल, एच0के0: अनुसंधान विधियाँ, हरी प्रसाद भार्गव प्रकाशन, आगरा, 1980

(III) Ph.D. Thesis:-

1. Kant, Nirmal: A comparative Study of Study Habits of High School Student (Ph.D, Psy. B.H.U., 1979)
2. Sunanda, G. : The effects of Counselling on the Study Habits and Achievement of Teacher Trainees. (Ph.D. Edu. Madras. U., 1980)